International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 5.143, Volume 02, No. 02, April - June, 2020, pp.195-196

राजस्थान की अलीबख्शी लोकनाट्य ख्याल परम्परा में प्रयुक्त वाद्य–यंत्र

डॉ. नीलम सैन*

प्रस्तावना

राजस्थान के लोकजीवन में ऐसा कोई क्षेत्र नहीं रहा, जिसमें संगीत, नृत्य और अभिनय की कोई सामूहिक लोक परम्परा नहीं रही हों, इन्ही लोक परम्पराओं के अन्तर्गत अलीबख्शी ख्यालों का गहरा रिश्ता भी राजस्थान की संस्कृति से रहा है। ''राजस्थानी ख्यालों की परम्परा में यही अकेली ऐसी शैली है जो अपने रचयिता के नाम से प्रसिद्ध है। अलीबख्श के नाम पर राजस्थान में इनकों अलीबख्शी ख्याल के नाम से जाना जाता है।''[1] अलीबख्शी ख्यालों में प्रयुक्त वाद्य यंत्र अलीबख्शी ख्यालों को लोक रूचिकर व मनभावन बना देते है। ढोलक एवं नगाड़े की चाप पात्र से लेकर दर्शकों तक में लय पैदा कर देती है। अलीबख्श गायन शैली व वादन शैली दोनों मिलकर अलीबख्श की नाट्य शैली को चारों और वातावरण में गुंजायमान कर देते है। अलीबख्शी ख्यालों में मंगलाचरण के समय अजीबख्श ने अपनी रचना में कुछ वाद्य यंत्रों के बारे में बताया है जो इस प्रकार है :–

मेरा जुड़ा हुआ मैदान, अखाड़ा लगा हुआ भरपूर।
खिल रही रोशनी, गैस नकारा बजे बादस्तुर।।
बज रहे झांझ, डप, ढोल, सांरगी सभा में बरसे कंचन नूर।
गरीबदास की मेहर से सजी स्वांग खिले भरपूर।।[2]

उपरोक्त पक्तियों में अलीबख्श ने अपने नाट्य ख्याल में प्रयुक्त वाद्य यंत्रों का वर्णन किया है। जैसे ढप, ढोल, नक्कारा, सांरगी, झांझ आदि।

अलीबख्श के लोकनाट्य ख्यालों में प्रयुक्त होने वाले वाद्य यंत्र इस प्रकार है :–

- **हारमोनियमः–** हारमोनियम हवा से बजने वाला वाद्य है। हारमोनियम में पर्दे होते है। अलीबख्शी ख्याल कलाकार इस वाद्य यंत्र का प्रयोग करते है। गायक अभिनेता इसमें अपना मुख्य स्वर कायम करके ही गायन शुरू करते है। यह एक ऐसा वाद्य है जिसमें गायक अपने आधार स्वर मध्य षडज से अपने गायन में प्रयुक्त होने वाला वाद्य जैसे तानपूरा, तबला, स्वरमण्डल इत्यादि को हारमोनियम के स्वर जिनकों आम बोल–चाल की सांगीतिक भाषा में काला या सफेद कहते है उससे मिलाते है। दक्षिण के कुछ भाग को छोड़कर पूरे भारत में लोकसंगीत के साथ हारमोनियम का ज्यादा प्रचार है चाहे पंजाब का भांगड़ा हो अथवा गिद्दा, गुजरात का गरबा अथवा महाराष्ट्र की लावनी सभी में हारमोनियम का प्रयोग किया जाता है।
- **सारंगीः–** सारंगी गज से बजाया जाने वाला बहुत ही आकर्षक व मधुर ध्वनि का तार वाद्य है। ''धनुषाकार की छड़ी पर धोड़े के बाल बांधकर गज को बजाया जाता है। यह सागवान या रोहिड़े की लकड़ी से निर्मित होती है। सारंगी से मिलते–जुलते लोक–वाद्यो में सारंगी की व्यापक लोकप्रियता इसलिए और अधिक है कि सारंगी ही ऐसा वाद्य है जिसकी लोक वाद्यो के रूप में यात्रा शुरू होती है और शास्त्रीय संगीत तक पहुंचती है।''[3]
- **ढोलकः–** ढोलक के बिना तो संगीत का आनन्द ही नहीं लिया जा सकता है। ढोलक आम, बीजा, शीषम्, सागौन, नीम, जामुन से बनती है। इसके दोनों मुख पर बकरे की खाल मढ़ी रहती है। इस खाल के भीतर एक विशेष प्रकार का लेप किया जाता है जिसे स्याही कहते है। अलीबख्शी ख्यालों में

6 सहायक प्रोफेसर, संगीत विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

ढोलक की अहम भूमिका है। ''लोकनाट्य कलाकार धीरसिंह बंसवालाजी के अनुसार ढोलक में दादरा, कहरवा के कई प्रकार अलीबख्श ख्यालों में बजाये जाते है। कलाकार ढोलक पर तीन तोड़ बजाता है जो अलीबख्शी वादन शैली की महत्पवूर्ण विशेषता है।''[4]

- **मंजीराः–** यह कांस्य या पीतल निर्मित वाद्य लय को बनाये रखने का कार्य करता है यह प्लेट के आकार का होता है। जिसके बीच में रस्सी डालकर उसमें गांठ लगा दी जाती है। दोनों को आपस में टकराकर बजाया जाता है। मंजीरा वाद्य की ध्वनि मधुर होती है।
- **नक्काडाः–** राजस्थान में शेखावाटी, बद्धी तथा अलवर क्षेत्र में नगाड़ा वादन की प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती है। नगाड़ा युद्ध के वाद्यों के साथ बहुत प्रयोग किया जाता है किन्तु राजस्थान के उत्सवों में इसका प्रचार अधिक है ''इस वाद्य का आकार दो कटोरों के समान होता है जिनमें एक छोटा दूसरा बड़ा, बड़ा कटोरा तांबे का तथा छोटा कटोरा लोहे का बना होता है। बड़े कटोरे पर भैंस की तथा छोटे पर ऊँट की खाल मढ़ी जाती है। ये खाल बद्धियों की सहायता से कसी जाती है। एक वादक के द्वारा दो डंड़ियों से बजाया जाता है। बड़ा नगाड़ा नीचे स्वर में तथा छोटा नगाड़ा ऊँचें स्वर में मिलाया जाता है इसके स्वर की ऊँचाई के लिए प्रायः इसे आग में सेकते है। बड़े नगाड़े की सतह में एक छेद होता है जिसमें पानी डालकर ऊपर मढ़ी खाल तक पहुंचाया जाता है जिसके कारण स्वर नीचा हो जाता है।''[5] ''लोकनाट्यकार श्री सुबेसिंह जी के अनुसार अलीबख्श के ख्यालों में भी नगाड़े का प्रयोग होता है इसको नगारा, नगाड़ा नक्कारी कहते है। नगारी को मादा और नगाड़े को नर कहते है ये दोनों प्रायः साथ बजते है।''[6]
- **ढोलः–** राजस्थान में सभी मांगलिक संस्कारो में ढोल की अनिवार्मिता मानी जाती है। अलीबख्श के गायन–वादन में भी ढोल का प्रयोग बहुतायत में होता है अतः इस वाद्य को मंगल का प्रतीक माना जाता है। ढोल एक बड़े बेलन के आकार का वाद्य है। जिसमें लोहें की सीधी और चपटी परते आपस में मढ़ी रहती है। वाद्य को कसने मढ़ने के लिए कुण्डल अथवा गजरे का प्रयोग किया जाता है इसे कसनें के लिए डोरी का भी प्रयोग किया जाता है। इसका नर भाग डड़ी के द्वारा तथा मादा हाथ से बजाया जाता है।[7] अलीबख्शी ख्याल गायन में ढोलक वाद्य, गायन को सुमधुर व रोचक बना देता है।
- **झांझः–** एक छोटे मंजीरे की बड़ी अनुकृति है। इसकी लम्बाई, चौड़ाई एक फुट के लगभग होती है। झांझ का प्रयोग अधिकतर ताशे के साथ होता है। अलीबख्श की लोकनाट्य शैली में इस बाद्य का प्रयोग बहुतायत में किया जाता है।

उपरोक्त विवेचन के अनुसार यह कथन कहा जा सकता है कि वाद्य यन्त्रों की मधुर–झंकार अलीबख्श के तमाशों को संगीतमय बना देती है संगीत की ये मधुर ताने दर्शक वर्ग को संगीत के मानसरोवर में निमग्न कर उन्हें रससिक्त कर देती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

~ सिंह, डॉ. जीवन (2018) अलीबख्शी ख्यालों का लोकरंग, बोधि प्रकाशन, जयपुर, पृ. सं. – 32

~ भारद्वाज, डॉ. रामकुमार, डॉ. अनिता (1999), लोककवि एवं नाट्यकार अलीबख्श, मौलिक साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. सं. – 122.

~ कुमारी, डॉ. कौशल (2009) भारतीय लोक वाद्य, साहित्य रत्नालय कानपुर, पृ. सं. – 71.

~ कुमारी, डॉ. कौशल (2009) भारतीय लोक वाद्य, साहित्य रत्नालय कानपुर, पृ. सं. – 106–107.

~ कुमारी, डॉ. कौशल (2009) भारतीय लोक वाद्य, साहित्य रत्नालय कानपुर, पृ. सं. – 103.

~ वादक, सुबेसिंह जी, करनीकोट (अलवर) द्वारा साक्षात्कार के माध्यम से लिखित।

~ कुमारी, डॉ. कौशल (2009) भारतीय लोक वाद्य, साहित्य रत्नालय कानपुर, पृ. सं. – 109.

❖◆❖